# निर्यात से नहीं बनी बात, घटेगी मिठास

सुशील मिश्र और
रामवीर सिंह गुर्जर
मुंबई/नई दिल्ली, 25 मई

**चीनी** की मिठास फिर से कम होने लगी है। सरकारी प्रोत्साहनों से निर्यात बढ़ने की उम्मीद में मार्च से चीनी के दाम बढ़ने लगे थे लेकिन अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय चीनी को वाजिब कीमत नहीं मिलने और निर्यात सब्सिडी घटने से निर्यात भी ठंडा पड़ गया। साथ ही चालू चीनी वर्ष में आपूर्ति मांग से ज्यादा होने की उम्मीद से दाम नरम पड़ रहे हैं। एक माह के दौरान हाजिर और वायदा बाजार में चीनी के भाव 10 फीसदी गिरकर उत्पादन लागत के करीब आ गए हैं। एक महीने पहले 3,300 रुपये प्रति क्विंटल बिकने वाली चीनी के भाव महाराष्ट्र के कोल्हापुर और मुंबई में 3000 रुपये से नीचे और उत्तर प्रदेश में एक्स-फैक्ट्री भाव 200 रुपये घटकर 3,150 से 3,200 रुपये पर आ गए। इस दौरान वायदा बाजार एनसीडीईएक्स में जून अनुबंध का भाव 3,240 रुपये से गिरकर 3,016 रुपये रह गया। चीनी कंपनी एसएनबी इंटरप्राइजेज के मालिक सुधीर भालोटिया ने बताया कि निर्यात पर सब्सिडी समेत अन्य सरकारी प्रोत्साहन के चलते चीनी के दाम में कुछ तेजी आई थी लेकिन अंतरराष्ट्रीय बाजार में चीनी के दाम घटने से निर्यात फायदेमंद नहीं रहा। इसलिए चीनी के दाम फिर गिरने लगे हैं। मौजूदा अंतरराष्ट्रीय भाव 475 से 480 डॉलर प्रति टन है, जबकि घरेलू बाजार में इससे ज्यादा दाम मिल रहे हैं। ऐंजल कमोडिटी के अनुज चौधरी ने बताया कि फिलहाल कीमतों में सुधार की संभावना नहीं है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय और घरेलू बाजार में मांग कमजोर बनी हुई है। इसके साथ ही चीनी मिलों के पास पहले का भी करीब 75 लाख टन चीनी का स्टॉक पड़ा है। चीनी के थोक कारोबारी नितिन देसाई के मुताबिक बाजार में चर्चा है कि नई सरकार जरूरी खाद्य वस्तुओं के वायदा कारोबार पर रोक लगा सकती है जिसके कारण कारोबारी ज्यादा खरीद से बच रहे हैं।

## चीनी कीमतों पर बना है दबाव

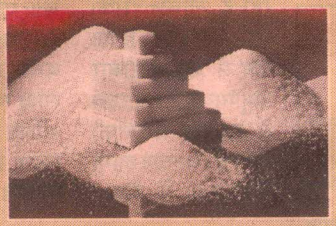

- निर्यात ठंडा पड़ने से घट रहे चीनी के दाम
- घरेलू बाजार में अधिक उपलब्धता से भी चीनी कीमतों पर दबाव

Business Bhaskar
26/5/14